बी० ए० पार्ट–3 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अतिथि व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

'गबन' में वर्णित मुख्य समस्याएँ

प्रेमचन्द के उपन्यासों पर सामूहिक दृष्टि से विचार करने पर हम देखते हैं कि उनके उपन्यासों का मूल प्रतिपाद्य विभिन्न समस्याओं का चित्रण करना रहा है। ये समस्याएँ जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, पारिवारिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों से संबंधित है।

समस्याओं के प्रतिपादन से उपन्यास के कला–पक्ष पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस पर विचार करना भी आवश्यक है। इसमें संदेह नहीं कि ऐसे उपन्यासों में प्रचार की झलक तथा किंचित् नीरसता तो आ जाती है, किंतु इस भय से समस्या–निरूपण से बचा भी नहीं जा सकता। साहित्य समाज का दर्पण है, अतः कोई भी लेखक युगीन चित्रण से बच नहीं सकता। स्वयं प्रेमचन्द जी ने भी स्वीकारा है–''जब साहित्य की रचना किसी सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक मत के प्रचार के लिए की जाती है तो वह अपने ऊँचे पद से गिर जाता है–इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन आजकल परिस्थितियाँ इतनी तीव्र गति से बदल रही है, इतने नए–नए विचार पैदा हो रहे हैं कि अब कोई लेखक साहित्य के आदर्श को ध्यान में रख ही नहीं सकता। यह बहुत मुश्किल है कि लेखक पर इन परिस्थितियों का असर न पड़े, वह उनसे आंदोलित न हो। यह स्पष्ट है कि प्रेमचंद भी अपने युग की परिस्थितियों से आंदोलित रहे हैं और इसी कारण कुछ आलोचकों ने उन्हें समस्यामूलक उपन्यासकार कहा है, कभी–कभी समस्याओं की बहुलता के कारण उनके उपन्यासों में कला संबंधी शिथिलता भी आ गई है और पाठक उनका आस्वादन करते समय विभिन्न समस्याओं के ताने–बाने में उलझकर रह जाता है, रसानुभूति उसे होती ही नहीं–और यदि होती भी हैं तो उनका निश्चय ही द्वितीय श्रेणी का रहता है। समस्या–निरूपण की दृष्टि से प्रेमचंद के उपन्यासों में 'गबन' का महत्वपूर्ण स्थान है।

'गबन' में प्रधान रूप से नारी की आभूषण–प्रियता तथा मध्यमवर्गीय प्रवृति की समस्या को उठाया गया है। कलकत्ता की घटनाओं के द्वारा उपन्यासकार ने पुलिस के हथकंडों का पर्दाफाश भी किया हैं। पुलिस संबंधी कथानक के संयोजन से पुलिस एवं न्याय–प्रबंध की समस्या को समुख लाया गया है। इसके अतिरिक्त वैवाहिक समस्या आदि समस्याओं को लेखक उपन्यास में प्रसंगानुकूल उठाता चला है, लेकिन इनमें से कोई भी समस्या प्रधान नहीं कही जा सकती। प्रधान समस्या के निर्धारण के लिए हमें उपन्यास के नायक और नायिका की समस्याओं की ओर देखना पड़ेगा। रमानाथ और जालपा

आभूषण–प्रियता के शिकार हैं और उनमें मध्यवर्गीय कृत्रिम प्रतिष्ठा प्राप्त करने की भावना कूट–कूटकर भरी पड़ी है। 'गबन' की मुख्य समस्याओं को निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है–

(1) आभूषण–प्रेम की समस्या

(2) सामाजिक प्रतिष्ठा की समस्या

(3) वैवाहिक समस्या

(4) विधवा जीवन की समस्या

(5) ऋण की समस्या

(6) विदेशीपन की नकल

(7) सुव्यवस्थित पुलिस प्रबंध की समस्या

(1) आभूषण–प्रेम की समस्याः– नारी जाति की आभूषण–प्रियता की समस्या को 'गबन' में मुख्य रूप के रखा गया है। स्त्री चाहे धनी वर्ग की हो, चाहे मध्यवर्ग की और चाहे निम्नवर्ग की, उसमें गहनों को प्राप्त करने की ललक एवं प्रेम समान होता है। इस उपन्यास का संपूर्ण कथानक नारी की इसी आभूषण–प्रियता पर आधारित है और उपन्यास का प्रत्येक स्त्री–पात्र गहनों के मोह में व्यस्त दिखाई देता है। जालपा बचपन से ही आभूषणों में पली है। जब वह तीन वर्ष की अबोध बालिका थी, उस समय उसके लिए सोने के चूड़े बनवाये गये थे। दादी जब उसे गोद में खिलाने लगती तो गहनों की ही चर्चा करती–'तेरा दूल्हा तेरे लिए बड़े सुंदर गहने लायेगा!' जब वह कुछ और बड़ी हुई, तब उसने गुड़ियों को गहने पहनाये थे। थोड़ा और बढ़ने पर अपने गाँव घर की स्त्रियों से वह गहनों की चर्चा सुना करती थी। इस तरह उसका जीवन एक ऐसी दुनिया में बीता था, जिसे प्रेमचंद ने 'आभूषण मंडित संसार' कहाँ है।

'गबन' की सभी स्त्री–पात्रों में गहनों के प्रति यह मोह देखा जा सकता है। गरीब देवीदीन की वृद्धा पत्नी एक न एक गहना बनवाती रहती है। देवीदीन ने उसकी इस प्रवृत्ति की ओर दो–तीन स्थानों पर संकेत किया है। रतन जैसी शिक्षित महिला भी आभूषणों को देखते ही मचल उठती है। घर पर जौहरी द्वारा दिखाये गए आभूषण पसंद आ जाने पर भी जब रूपयों के अभाव में वह उन्हें खरीद नहीं पाती, उस समय उसके मनोभावों में आभूषण–प्रेम स्पष्टतः झलकता है–''उसके हृदय की सारी ममता, समता का सारा अनुराग, अनुराग की सारी अधीरता, उत्कण्ठा और चेष्टा उसी हार पर केंद्रित हो रही थी मानो उसको प्राण उसी हार के दोनों में जा छिपे थे।.....जौहरी को संदूक बंद करते देखकर वह जल–विहीन मछली की भाँति तड़पने लगी। कभी यह संदूक खोलती, कभी वह दराज खोलती, पर रूपये कहीं नहीं मिले।''पृष्ठ–121

(2) सामाजिक प्रतिष्ठा की समस्याः–'गबन' की दूसरी प्रमुख समस्या समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने की है। इस समस्या का संबंध मध्यवर्ग के उन कम आय वाले परिवारों से है, जो मनोरंजन, फैशन और विलास के लिए उन सभी उपकरणों को जुटाते हैं; जिनका उपभोग केवल धनी वर्ग करता आया है। यह वर्ग आर्थिक साधनों के अभाव में भी व्ययसाध्य कार्यो में जी खोलकर खर्च करता है। रमानाथ के रूप में लेखक ने ऐसे ही वर्ग का प्रतिनिधि चरित्र प्रस्तुत किया है जो आडंबर तथा मिथ्या–प्रदर्शन का पक्षपाती है। उसके चरित्र में दिखावा की प्रवृत्ति प्रारंभ से है और अंत तक चलती है। विवाह के अवसर पर रमानाथ की मिथ्या–प्रदर्शन की भावना पर लेखक ने लिखा है–दयानाथ दिखावा और नुमाइश को चाहे

अनावश्यक समझें, रमानाथ उसे परमावश्यक समझता था। बारात ऐसी धूमधाम से जानी चाहिए कि गाँव भर में शोर मच जाए। पहले दूल्हें के लिए पालकी का विचार था, रमानाथ ने मोटर पर जोर दिया। पृ–7–8

(3) वैवाहिक समस्या– प्रेमचंदयुगीन समाज में लड़की का विवाह एक बहुत बड़ी समस्या थी। समस्या तो आज भी है, लेकिन आज की स्थिति पहले से काफी परिवर्तित हो गई है। उस समय धन के आधार पर ही विवाह होने थे। लड़का योग्य है या अयोग्य विद्वान् है या मूर्ख, युवा है या वृद्ध इसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता था। लड़की के माता–पिता केवल यह देखते कि लड़का कितना धनी है, उसके माता–पिता के पास कितनी धन–संपत्ति है। रमानाथ की माता जागेश्वरी सोचती है–''कोई यहाँ क्यों आने लगा? न धन ही है, न जायदाद। लड़के पर कौन रीझता है। लोग तो धन देखते हैं।''पृष्ठ–5 धन के मापदंड के कारण समाज में बेमेल विवाह होते हैं, शिक्षित लड़की की अशिक्षित पुरूष से युवा का वृद्ध से विवाह कर दिया जाता है। जालपा की तीनों सहेलियों का विवाह बेमेल होता है। उसकी एक सहेली का पति एम॰ ए॰ है पर सदा रोगी रहता है, दूसरा विद्वान और धनी है पर वेश्यागामी है और तीसरा घर–घुस्सू और बिल्कुल निखट्टू है। रतन के मामा धन के लालच में उसका बूढ़े वकील के साथ विवाह कर देते हैं। रतन के विवाह के द्वारा उपन्यासकार ने धन लेकर लड़कियों को बेचने की समस्या की ओर भी संकेत किया है। रमानाथ और जालपा के विवाह द्वारा प्रेमचंद विवाह के लिए स्वास्थ्य और चरित्र की अनिवार्यता पर बल देते हैं।

(4) विधवा जीवन की समस्याः– अनमेल विवाह के साथ–साथ एक अन्य समस्या की और भी प्रेमचंद ने पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहा है–और वह है पति की मृत्यु के उपरांत विधवा की सामाजिक स्थिति की समस्या। रतन के चरित्र द्वारा इसी ओर अप्रत्यक्ष रूप में संकेत दिया गया है। वस्तुत प्रेमचंद विधवाओं की दयनीय दशा के कारण बहुत दुःखी थे और उनको वह सभी सुविधाएँ दिलाने के पक्ष में थे, जो उन्हें नैतिक दृष्टि से मिलनी चाहिए। 'गबन' में प्रेमचंद ने विधवाओं के आर्थिक अधिकार की समस्या को चित्रित किया है। रतन के पति की मृत्यु के उपरांत उसका भतीजा संपत्ति पर अधिकार कर लेता है क्योंकि सम्मिलित परिवार में विधवा का अपने पुरूष की संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता। रतन की करूणा–स्थिति भारतीय विधवा की पराधीनता की ओर संकेत करती है। भारतीय पारिवारिक जीवन में पति के जीवन काल तक स्त्री की स्थिति प्रायः सुरक्षित रहती है, लेकिन पति की मृत्यु के उपरांत उसे दूसरों की दया पर निर्भर रहना पड़ता है। रतन अपनी स्थिति के प्रति विद्रोह करती है और सब कुछ त्याग कर जालपा के यहाँ चली जाती है।

(5) ऋण की समस्याः– मध्यवर्ग के व्यक्ति की आर्थिक स्थिति अधिक दृढ़ नहीं होती, किंतु समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए उसे व्यय काफी करना पड़ता है। इसका परिणाम यह होता है कि वह अनायास ही ऋण के जाल में उलझ जाता है और ऐसा उलझता है कि उससे निकलना असंभव हो जाता है। 'गबन' में इस समस्या की ओर दीनानाथ और रमानाथ के माध्यम से संकेत किया गया है। बाबू दीनानाथ अपने पुत्र रमानाथ के विवाह में कर्ज लेते हैं। उनका विचार है कि लड़की वाले के यहाँ से रूपये आने पर ऋण लौटा दिया जाएगा। किंतु जब लड़की वाले के वहाँ से इतने रूपये नहीं मिल पाते तो उन्हें सर्राफ से पीछा छुड़ाने के लिए 2,500 रूपये के गहने केवल 2,500 रूपये में बेचने पड़ते है। इसी प्रकार, रमानाथ भी अपनी पत्नी जालपा के गहने उधार ले आता है।

(6) विदेशीपन की नकलः–'गबन' में पाश्चात्य सभ्यता के अनुकरण की समस्या भी प्रस्तुत की गई है, यद्यपि वह गौण रूप में ही चित्रित हुई है। प्रेमचंद का युग पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण की ओर तेजी से बढ़ रहा था। 'गबन' में इस अनुकरण की प्रवृत्ति कहीं–कहीं देखी जा सकती है। रमेश और दयानाथ काशी के धनी वकील की पत्नी रतन की चाय–पार्टी में विदेशी चीजों के प्रयोग की कटु

आलोचना करते हैं। भारत में विदेशियों का प्रभाव बाह्म वेशभूषा पर अधिक पड़ा। पुरूषों ने अंग्रेजों की नकल पर कोट, पतलून, टाई आदि को पहनावा में धारण कर लिया और स्त्रियों ने साज श्रृंगार के लिए वेसलीन, क्रीम, स्नो–पाउडर आदि को । अंग्रेजी महिलाओं की नकल पर रतन मोटर से उतर कर रमानाथ से हाथ मिलाती है।

(7) सुव्यवस्थित पुलिस–प्रबंध की समस्याः– प्रेमचंद ने 'गबन' में भारतीय पुलिस की कार्य–प्रणाली एवं उसके हथकंडों का चित्रण करके सुव्यवस्थित पुलिस–प्रबंध की समस्या को प्रस्तुत किया है। अंग्रेजी शासन में पुलिस न्याय की स्थापना के लिए नहीं थी, बल्कि वह अपनी स्वार्थ–सिद्धि के लिए न्याय का ढोंग रचती थी। वह सच्चे अपराधियों की मिथ्या–न्याय का षड्यंत्र रचती है। रमानाथ के निर्दोष प्रमाणित होने पर भी पुलिस के अफसर उसे अपने चंगुल में फँसाए रखते है और उकसा एक मुकदमें में गवाह के रूप में के लिए शक्ति का दुरूपयोग करते हैं।

(8) अन्य समस्याएँ–'गबन' में उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त अन्य छोटी–छोटी समस्याओं को भी चित्रित किया गया है। मनोरंजन के व्ययसाध्य साधनों की समस्या, आर्थिक समस्या, दान का पाखंड, वकीलों और डाक्टरों की स्थिति, स्वदेशी–विदेशी समस्या, मिल मालिकों की दोहरी नीति, रिश्वत की समस्या, अछूतोद्धार की समस्या, पारिवारिक अव्यवस्थाएँ वेश्या–जीवन की समस्या आदि अनेक समस्याओं को 'गबन' में गौण रूप में उठाया गया है।

'गबन' के अंत में रमानाथ के परिवार को जितनी सादगी और सुख से जीवन व्यतीत करते हुए दिखाया गया है, उससे यह संकेत भी निश्चित रूप से मिलता है कि उपन्यासकार की दृष्टि में सरल एवं उच्च विचारों से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करने से ही इन विभिन्न सामाजिक समस्याओं से मुक्ति मिल सकती है। वस्तुतः प्रेमचंद के उपन्यासों में केवल समस्या का निरूपण ही नहीं है, बल्कि उसके समाधान पर भी विचार किया गया है। यह समाधान अधिकांशतः सांकेतिक है, और यही उपन्यासकार की उल्लेखनीय सफलता है।